जनजातीय एवं कृषक विद्रोह

Tribal and Peasant Movements

MA-SEM-4

Unit II - Topic ②

जनजातीय विद्रोह

भारत के अनेक हिस्सों में रहने वाले जनजातियों ने जिनमें आदिवासी प्रमुख थे, 19 वीं शताब्दी में संगठित होकर ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध कई छापामार लड़ाइयां लड़ी। ब्रिटिश काल के यह जनजातीय आंदोलन अन्य आंदोलनों से इस दृष्टि से भिन्न थे; क्योंकि ये अत्यधिक हिंसक और संगठित थे, आदिवासियों की एकजुटता सराहनीय थी। आदिवासियों एवं जनजातियों ने अपने को वर्ग के आधार पर संगठित कर जातीय आधार पर जैसे संथाल, कोल, मुंडा के रूप में संगठित किया था।

प्रमुख जनजातीय/आदिवासी आंदोलन

① **पहाड़िया विद्रोह** - राजमहल की पहाड़ियों में स्थित उन जनजातियों का विद्रोह था, जिनके क्षेत्रों में अंग्रेजों ने हस्तक्षेप किया था। 1778 ई० में इनके हिंसक संघर्ष से परेशान होकर अंग्रेजों ने इनके साथ समझौता किया और इनके क्षेत्र को 'दामनी कोल' क्षेत्र घोषित कर दिया।

② **खोंड विद्रोह** - खोंड जनजाति के लोग तमिलनाडु से लेकर बंगाल और मध्यभारत तक फैले हुये थे। इन्होंने 1837 से 1856 ई० के बीच ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध विद्रोह किया।

सरकार द्वारा नये करों को लागू करना, उनके क्षेत्रों में जमींदारों और साहूकारों का प्रवेश खोंड विद्रोह का प्रमुख कारण था। इस आंदोलन का नेतृत्व चक्र बिसोई ने किया।

3) कोल विद्रोह → कोल विद्रोह 1832 ई० से 1837 ई० के मध्य रांची, सिंहभूम, हजारीबाग, पलामू और मानभूम के पश्चिमी क्षेत्रों में फैला। इस विद्रोह का प्रमुख कारण था, अंग्रेजों द्वारा आदिवासियों की भूमि को उनके मुखियाओं मुंडाओं से जबरन लेकर मुसलमान तथा सिक्ख कृषकों को दे देना। अंग्रेजों ने इस विद्रोह का भी क्रूरतापूर्वक दमन किया।

④ संथाल विद्रोह - संथाल विद्रोह जनजातीय विद्रोहों में सर्वाधिक प्रभावशाली विद्रोह था। यह विद्रोह 1855-56 के मध्य मुख्यतः भागलपुर से राजमहल की पहाड़ियों के बीच केंद्रित था। यह विद्रोह सिद्धू और कान्हू नामक दो संथालों के नेतृत्व में किया गया था।

उनके नेतृत्व में संथाल लोगों ने भूमिज अधिकारियों के हाथों अपमान, पुलिस के दमन, जमींदारों/साहूकारों की वसूलियों के विरुद्ध अपना रोष प्रकट करते हुये विद्रोह। इस विद्रोह का अंत सिधू और कान्हू की मृत्यु के साथ हुआ)

⑤ खरवार विद्रोह - संथालों के विद्रोह के दमन के बाद 1870 में हुये इस विद्रोह का मुख्य कारण भू-राजस्व व्यवस्था का विरोध करना था।

⑥ भील आंदोलन - राजस्थान के बांसवाड़ा, सूंठ और डूंगरपुर क्षेत्र के भीलों द्वारा गोविंद गुरु के सुधारों (बंधुआ मजदूरी से संबंधित) से प्रेरित होकर विद्रोह किया गया।

1913 तक यह आंदोलन काफी तीव्र हो गया था, कि विद्रोहियों ने एक अलग भील राज्य की स्थापना हेतु प्रयास भी करना शुरू किया था, लेकिन अंततः ब्रिटिश सेना के अत्यधिक प्रयास के बाद इस विद्रोह का दमन कर दिया गया।

7) **मुंडा विद्रोह** - 1893 से 1900 के बीच बिरसा मुंडा के नेतृत्व में यह आंदोलन हुआ। मुंडाओं की पारंपरिक भूमि व्यवस्था, खूंटकट्टी या जमींदारी भूमि व्यवस्था में परिवर्तन के विरुद्ध मुंडा विद्रोह की शुरुआत हुई, लेकिन कालांतर में बिरसा मुंडा ने इसे धार्मिक-राजनीतिक आंदोलन का रूप प्रदान कर दिया।

1895 में बिरसा ने अपने आप को 'ईश्वर का दूत' घोषित किया और हजारों मुंडाओं के नेता बन गये। 1900 के प्रारंभ में बिरसा मुंडा को गिरफ्तार कर लिया गया, जहां जेल में ही उनकी मृत्यु हो गयी।

(8) **ताना भगत आंदोलन** - तानाभगत आंदोलन की शुरुआत द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद छोटानागपुर के क्षेत्र में हुई। इस आंदोलन को भगत आंदोलन इसलिए कहा गया कि इसका नेतृत्व आदिवासियों के बीच के उनलोगों ने किया जो फकीर या धर्माचार्य थे। इस आंदोलन को जतरा भगत, बलराम भगत, देवमेनिया भगत ने अपना नेतृत्व प्रदान किया।

(9) **रंपा विद्रोह** - यह विद्रोह आंध्रप्रदेश के गोदावरी जिले के उत्तर में स्थित रंपा क्षेत्र में हुआ। आदिवासियों का यह विद्रोह साहूकारों के शोषण और वन-कानूनों के विरुद्ध हुआ।

1922-24 ई० के बीच हुए रंपा विद्रोह के नेता अल्लूरी सीताराम राजू थे, जो गैर-आदिवासी नेता थे। 1924 ई० में सीताराम राजू की हत्या कर विद्रोह को कुचल दिया गया।

(10) **चेंचू आंदोलन** - आंध्र प्रदेश के गुंटूर जिले में 1920 ई० के असहयोग आंदोलन के समय जंगल-सत्याग्रह के रूप में आंदोलन शुरू हुआ। दिसंबर 1927 में गांधी जी ने भी इस क्षेत्र का दौरा किया।

भारत के प्रमुख कृषक आंदोलन

भारत में स्वतंत्रता संग्राम के दौरान या उससे पूर्व जो भी कृषक आंदोलन हुये, उनमें आदिवासियों, जनजातियों और किसानो का अहम योगदान रहा है। देश में नील पैदा करने वाले किसानों का आंदोलन, पाबना विद्रोह, तेभागा आंदोलन, चंपारण का सत्याग्रह और बारदोली में जो आंदोलन हुये थे, इन आंदोलनों का नेतृत्व महात्मा गांधी, वल्लभभाई पटेल जैसे नेताओं ने किया। आमतौर पर किसानों के आंदोलन या उनके विद्रोह की शुरुआत 1859 से हुई थी, लेकिन चूंकि अंग्रेजों की नीतियो पर सबसे ज्यादा किसान प्रभावित हुये, इसलिए आजादी के पहले भी इन नीतियों ने किसान आंदोलनों की नींव डाली।

आंदोलनकारी किसान चाहे तेलंगाना के हों या नक्सलवाड़ी के हिंसक लड़ाके, सभी ने छापामार आंदोलन को बढ़ाने में अहम योगदान दिया।

नील पैदा करने वाले किसानो का विद्रोह, पाबना विद्रोह, तेभागा आंदोलन, चंपारण सत्याग्रह, बारदोली सत्याग्रह और मोपला विद्रोह प्रमुख कृषक आंदोलन के रूप में जाने जाते हैं।

प्रमुख कृषक विद्रोह

(1) **पबना विद्रोह** – इसी प्रकार का पहला विद्रोह पाबना जिले के किसानों से शुरू हुआ था। बंगाल के पाबना जिले के काश्तकारों को सन् 1859 में एक एक्ट के द्वारा सीमा से अधिक लगान वसूला

जाने लगा। जमींदारों की ज्यादती का विरोध करने के लिए सन् 1873 में पाबना के युसुफ सराय के किसानों ने मिलकर एक कृषक संघ का गठन किया। इस संगठन का मुख्य कार्य पैसे एकत्र करना एवं सभाएं आयोजित करना होता था, ताकि किसान अधिकारिक रूप से अपने अधिकारों के लिए सजग हो सकें।

② **दक्कन का विद्रोह** - यह विद्रोह देश के विभिन्न भागों में फैला। पाबना विद्रोह का विस्तृत रूप ही दक्कन का विद्रोह था, क्योंकि महाराष्ट्र के पूना एवं अहमदनगर जिलों में गुजराती एवं मारवाड़ी साहूकार सारे हथकंडे अपनाकर किसानों का शोषण कर रहे थे। इन साहूकारों के विरुद्ध आंदोलन की शुरुआत सन् 1874 में शिरूर तालुका के करडाह गांव से हुई।

③ **उत्तर प्रदेश में किसान आंदोलन** — सन् 1919 में उत्तरप्रदेश में किसान सभा का गठन किया गया। 1919 के अंतिम दिनों में किसानों का संगठित विद्रोह खुलकर सामने आया। उत्तर प्रदेश के हरदोई, बहराइच एवं सीतापुर जिलों में लगान में वृद्धि एवं उपज के रूप में लगान वसूली को लेकर अवध के किसानों ने 'एका आंदोलन' नामक आंदोलन चलाया।

④ **मोपला विद्रोह** — केरल के मालाबार क्षेत्र में मोपला किसानों द्वारा सन् 1920 में विद्रोह किया गया। इस आंदोलन के मुख्य नेता के रूप में 'अली मुसलियार' चर्चित थे।

⑤ **कूका विद्रोह** — कृषि संबंधी समस्याओं के खिलाफ अंग्रेज सरकार से लड़ने के लिए बनाये गये इस संगठन के संस्थापक भगत जवाहर मल थे। सन् 1872 में इनके शिष्य बाबा रामसिंह ने अंग्रेजों का कड़ाई से सामना किया। कालांतर में उन्हें कैद कर लिया गया।

6. रामोसी किसानों का विद्रोह - महाराष्ट्र में वासुदेव बलवंत फड़के के नेतृत्व में रामोसी किसानों ने जमींदारों के अत्याचारों के विरुद्ध विद्रोह किया।

⑦ तेभागा आंदोलन - कृषक आंदोलनों में सन् 1946 का बंगाल का तेभागा आंदोलन सर्वाधिक सशक्त आंदोलन था। इसमें किसानों ने 'फ्लाउड कमीशन' की सिफारिश के अनुसार लगान की दर घटाकर एक-तिहाई करने के लिए संघर्ष शुरू किया था। यह आंदोलन बंगाल के 28 में से 15 जिलों के केवल विशेषकर उत्तरी और तटवर्ती सुंदरवन क्षेत्रों में। इस आंदोलन में लगभग 50 लाख किसानों ने भाग लिया।

⑧ तेलंगाना आंदोलन - आंध्रप्रदेश में यह आंदोलन जमींदारों एवं साहुकारों की शोषण की नीति के विरुद्ध 1946 में प्रारंभ किया गया।

⑨ चंपारण सत्याग्रह - चंपारण का किसान आंदोलन अप्रैल 1917 ई० में हुआ था। गांधी जी ने सत्य और अहिंसा के अपने अस्त्र का प्रथम प्रयोग चंपारण की धरती पर ही किया। इसी आंदोलन के बाद इन्हें 'महात्मा' की उपाधि से विभूषित किया गया।

⑩ खेड़ा सत्याग्रह - चंपारण के बाद गांधीजी ने सन् 1918 में खेड़ा किसानों की समस्याओं को लेकर आंदोलन शुरू किया। खेड़ा गुजरात में स्थित है। गांधी जी ने अपने प्रथम वास्तविक 'किसान सत्याग्रह' की शुरुआत खेड़ा से की। गांधी जी के मार्च 1918 में खेड़ा आंदोलन की बागडोर संभाली।

⑪ बारदोली सत्याग्रह - सूरत (गुजरात) के बारदोली तालुका में सन् 1928 में किसानों द्वारा 'लगान न अदायगी' का आंदोलन चलाया गया। इस आंदोलन में केवल 'कुनबी-पाटीदार' जातियों के भू-स्वामी किसानों ने नहीं, बल्कि सभी जनजाति के लोगों ने हिस्सा लिया।